REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 7 | APRIL - 2018

संत तुलसीदास

डॉ.सौदागर म. साळुंखे
हिंदी .पीएच.डी. मा.ह.महाडीक कला एवं वाणिज्य
महा.मोडनिंब. ता. माढा, जिल्हा. सोलापूर.

सारांश

हिंदू धर्म में महान संतों और संतों का गौरवशाली अतीत रहा है। कई संतों ने गुरु के रूप में चढ़ाई की और कई लोगों को ईश्वर प्राप्ति का मार्ग दिखाया। उन्होंने अपने आचरण और कार्यों के माध्यम से समाज को आध्यात्मिकता भी सिखाई। उनका मिशन केवल अध्यात्म तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने राष्ट्र की रक्षा के लिए जब भी मुश्किलें आईं, उन्होंने काफी काम किया। कुछ संतों ने पूरी दुनिया की यात्रा की और बिना किसी व्यक्तिगत अपेक्षा के भारत के आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार किया। इसका लाभ विदेशों में लाखों लोगों को मिल रहा है। पिछले लाखों वर्षों से, ऋषियों ने वैदिक ज्ञान को संरक्षित करने के लिए जबरदस्त प्रयास किया, जो कि भारत का गौरव है। उन्होंने मानव जीवन से जुड़े कई विषयों को भी बनाया और इसे आसान बना दिया। हालांकि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत के संतों ने दुनिया को गुरुशिष्य की परंपरा का दान दिया है। हालांकि मौजूदा दृश्य कुछ और ही है। क्रिकेटर, फिल्म हीरो और हीरोइन हिंदुओं के आदर्श बन गए हैं। साथ ही स्वार्थ और संकीर्णता के दो दोष हिंदुओं में हावी हो गए हैं जो हिंदू समाज को बहुत नुकसान पहुंचा रहे हैं।

मुल शब्द : नरहरिदास, हिन्दू धर्म, रत्नावली, सोरों शूकरक्षेत्र, कासगंज ,

प्रस्तावना

तुलसीदास अपने पानी के घड़े में बचे पानी को उस पेड़ की जड़ों में फेंक देते थे जिस पर एक आत्मा का कब्जा था। तुलसीदास जी से आत्मा बहुत प्रसन्न हुई। आत्मा ने कहा,"हे मनुष्य! मुझसे वरदान प्राप्त करो।" तुलसीदास ने उत्तर दिया, "मुझे श्रीराम के दर्शन करने दो"। आत्मा ने कहा, "हनुमान मंदिर जाओ। वहाँ हनुमान एक कोढ़ी के वेश में रामायण को प्रथम सुनने वाले के रूप में सुनने आते हैं और सबसे अंतिम स्थान को छोड़ देते हैं। उसे पकड़ लो। वह आपकी मदद करेगा "। तदनुसार, तुलसीदास हनुमान से मिले, और उनकी कृपा से, श्री राम के दर्शन या दर्शन हुए। ऐसी परिस्थितियों में त्याग, प्रेम की शिक्षा देने वाले संतों के

जीवन का अध्ययन और पालन करना आवश्यक हो गया है। धार्मिकता के प्रति समर्पण, राष्ट्र के प्रति समर्पण, समाज की मदद करना और क्षत्रधर्म (एक योद्धा का कर्तव्य)। हम एतद्द्वारा उनसे जुड़े मामले को प्रकाशित कर रहे हैं ताकि लोगों को ऐसे महान संतों के बारे में पता चले। हम भगवान के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि हिंदुओं को उनकी जीवनी और शिक्षाओं का अध्ययन करने और उनका पालन करने की प्रेरणा मिले।

संत तुलसीदास

तुलसीदास (1532 - 1623) को भारत के सबसे महान हिंदू संतों में से एक माना जाता है। उन्हें हिंदू धर्म के भक्ति स्कूल के सबसे प्रसिद्ध प्रतिनिधियों में से एक माना जाता है। गोस्वामी तुलसीदास श्री राम के बहुत बड़े भक्त थे। वह भारत के सबसे परिचित संतों में से एक हैं और श्री राम की महाकाव्य कहानी का उनका संस्करण जिसे "श्री राम-चरित-मानस" कहा जाता है, एक अत्यंत लोकप्रिय ग्रंथ है। श्री रामचरितमानस भक्ति की उस उच्च अवस्था का प्रमाण है जो इस संत ने प्राप्त की है और भगवान ने उस पर कृपा की है। ऐसा कहा जाता है कि श्री राम और श्री लक्ष्मण कुछ अवसरों पर व्यक्तिगत रूप से तुलसीदास के सामने आए हैं। गोस्वामी तुलसीदास की कहानी वर्तमान युग में उम्मीदवारों के लिए अत्यधिक प्रेरणादायक है; यह ईश्वर में विश्वास को पुनर्जीवित करता है और साबित करता है कि इस कलियुग में भी शुद्ध भक्ति के माध्यम से ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है।

जन्म

तुलसीदास का जन्म 1532 में राजपुर, उत्तर प्रदेश, भारत में हुलसी और आत्माराम शुक्ल दूबे के घर हुआ था। वह जन्म से सरयूपरिणा ब्राह्मण थे और संस्कृत रामायण के लेखक ऋषि वाल्मीकि के अवतार थे। जन्म के समय गोस्वामीजी पाँच वर्ष के बालक के समान स्वस्थ थे और रोने के स्थान पर उन्होंने "राम" का उच्चारण किया। इस समय, श्री राम ने आकाशवाणी की और दिव्य बच्चे का नाम "राम्बोला" रखा।

वाल्मीकि का अवतार

तुलसीदास को महान ऋषि वाल्मीकि का अवतार माना जाता है। भविष्योत्तर पुराण में, शिव पार्वती को बताते हैं कि कैसे वाल्मीकि को कलियुग में स्थानीय भाषा में श्री राम की महिमा गाने के लिए हनुमान से वरदान मिला था। तुलसीदास के समकालीन और महान भक्त नाभादास ने भी अपनी कृति भक्तमाल में तुलसीदास को वाल्मीकि के अवतार के रूप में वर्णित किया है। यहां तक कि रामनंदी संप्रदाय (तुलसीदास इस संप्रदाय के थे) का दृढ़ विश्वास है कि यह स्वयं वाल्मीकि थे जिन्होंने कलियुग में तुलसीदास के रूप में अवतार लिया था। फैमिली मैन से लेकर तपस्वी तक तुलसीदास की पत्नी का नाम बुद्धिमती (रत्नावली) था। तुलसीदास के पुत्र का नाम तारक था। तुलसीदास को अपनी पत्नी से बहुत लगाव था। वह उससे एक दिन का भी अलगाव नहीं सह सका। एक दिन उसकी पत्नी बिना पति को बताए अपने पिता के घर चली गई। तुलसीदास रात को चुपके से अपने ससुर के घर उनसे मिलने गए। इससे बुद्धिमती में शर्म की भावना पैदा हुई। उसने तुलसीदास से कहा "मेरा शरीर मांस और हड्डियों का एक जाल है। यदि तुम श्री राम के लिए मेरे मलिन शरीर के प्रति अपने प्रेम का आधा भी विकसित कर लेते, तो तुम निश्चय ही संसार के सागर को पार कर जाते और अमरत्व और शाश्वत आनंद प्राप्त कर लेते। ये शब्द तुलसीदास के हृदय को तीर की तरह चुभ

गए। वह वहां एक पल के लिए भी नहीं रुका। उन्होंने घर छोड़ दिया और एक तपस्वी बन गए। उन्होंने तीर्थ के विभिन्न पवित्र स्थानों की यात्रा में चौदह वर्ष बिताए।

अमर कार्य

तुलसीदास ने बारह पुस्तकें लिखीं। सबसे प्रसिद्ध पुस्तक उनकी रामायण - राम-चरित-मानस - हिंदी में है। उन्होंने यह पुस्तक हनुमान के निर्देशन में लिखी थी। इस रामायण को उत्तर भारत के हर हिंदू घर में बड़ी श्रद्धा के साथ पढ़ा और पूजा जाता है। यह एक प्रेरक पुस्तक है। इसमें सुंदर तुकबंदी में मीठे दोहे हैं। विनय पत्रिका तुलसीदास द्वारा लिखित एक और महत्वपूर्ण पुस्तक है। श्री राम स्वयं अपने माल की रक्षा के लिए संकट उठा रहे हैं। कुछ चोर तुलसीदास के आश्रम में उनका सामान लेने आए थे। उन्होंने नीले रंग का एक रक्षक देखा, जिसके हाथों में धनुष और बाण था, जो द्वार पर पहरा दे रहा था। वे जहां भी जाते थे, गार्ड उनका पीछा करते थे। वे डरे हुए थे। प्रातःकाल उन्होंने तुलसीदास से पूछा, "हे पूज्य संत! हमने आपके निवास के द्वार पर एक युवा रक्षक को हाथों में धनुष-बाण के साथ देखा। यह आदमी कौन है? " तुलसीदास चुप रहे और रो पड़े। उन्हें पता चला कि श्री राम स्वयं अपने माल की रक्षा के लिए संकट उठा रहे थे। उसने तुरंत अपनी सारी संपत्ति गरीबों में बांट दी। तुलसीदास ने एक हत्यारे को उसके पापों से मुक्त कर दिया

एक दिन एक कातिल आया और चिल्लाया, "राम के प्रेम के लिए मुझे भिक्षा दो। मैं एक हत्यारा हूँ "। तुलसी ने उसे अपने घर बुलाया, उसे पवित्र भोजन दिया जो श्री को चढ़ाया गया था और घोषित किया कि हत्यारे को शुद्ध किया गया था। वाराणसी के ब्राह्मणों ने तुलसीदास की निन्दा की और कहा, "हत्यारे का पाप कैसे दूर हो सकता है? आप उसके साथ कैसे खा सकते थे? यदि शिव का पवित्र बैल - नंदी - हत्यारे के हाथों से खा जाएगा, तभी हम स्वीकार करेंगे कि वह शुद्ध हो गया था।" तब हत्यारे को मन्दिर में ले जाया गया और बैल ने उसके हाथों से खा लिया। ब्राह्मणों को शर्मसार किया गया।

भटकना और चमत्कार

तुलसीदास एक बार श्रीकृष्ण के मंदिरों के दर्शन करने वृंदावन गए थे। कृष्ण की मूर्ति को देखकर उन्होंने कहा, "मैं आपकी सुंदरता का वर्णन कैसे करूं हे श्री! लेकिन तुलसी अपना सिर तभी झुकाएगी जब आप अपने हाथों में धनुष-बाण उठाएंगे।" श्रीराम ने तुलसीदास के सामने धनुष-बाण लेकर स्वयं को श्रीराम के रूप में प्रकट किया। ऐसा माना जाता है कि तुलसीदास के आशीर्वाद ने एक बार एक गरीब महिला के मृत पति को फिर से जीवित कर दिया। दिल्ली में मुगल सम्राट को तुलसीदास द्वारा किए गए महान चमत्कार के बारे में पता चला। सम्राट ने संत से कोई चमत्कार करने को कहा। तुलसीदास ने उत्तर दिया, "मेरे पास कोई अलौकिक शक्ति नहीं है। मैं तो राम का ही नाम जानता हूं।" सम्राट ने तुलसी को कारागार में डाल दिया और कहा, "मैं तुम्हें तभी छोड़ूंगा जब तुम मुझे कोई चमत्कार दिखाओगे। इसके बाद तुलसी ने हनुमान से प्रार्थना की। शक्तिशाली वानरों के अनगिनत दल शाही दरबार में प्रवेश कर गए। सम्राट भयभीत हो गया और कहा, "हे संत, मुझे क्षमा करें। मैं अब आपकी महानता को जानता हूं।" उन्होंने तुलसी को तुरंत जेल से रिहा कर दिया।रामबोला अपने गुरु से मिले

रामशैला पर्वत पर एक अध्यात्मवादी अनंतानंद के शिष्य नरहरिआनन्द रहते थे। वे राम भक्त थे। एक रात भगवान शिव ने उन्हें सपने में दर्शन दिए। भगवान शिव ने उन्हें एक अनाथ लड़के रामबोला के बारे

में बताया और उनसे लड़के को शिक्षित करने और धार्मिक शास्त्रों का अध्ययन करने का आग्रह किया। भगवान की प्रेरणा से स्वामी नरहरि ने लड़के को पाया और उसे अयोध्या ले गए। स्वामी नरहरि ने लड़के को भगवान 'राम' के पवित्र नाम से दीक्षा दी। रामबोला ने अपने गुरु के मार्गदर्शन में पवित्र शास्त्रों का अध्ययन किया। उनका दिमाग बहुत तेज और ग्रहणशील था। वह अपने गुरु द्वारा सिखाए गए हर शब्द को याद कर सकता था। रामबोला अपने गुरु 'स्वामी नरहरि' के साथ सोरो नामक स्थान पर आए, जहाँ स्वामी नरहरि ने उन्हें भगवान राम की कहानी सुनाई। भगवान राम उनके जीवन के केंद्रीय व्यक्ति बने। रामबोला रामकेंद्रित बन गए। वहां से स्वामी नरहरि और रामबोला काशी गए। 15 वर्षों तक उन्होंने स्वामी शेष सनातनजी के मार्गदर्शन में हिंदू धर्म के सभी शास्त्रों और पवित्र पुस्तकों के अध्ययन में अपना जीवन समर्पित कर दिया। रामबोला को अब तुलसीदास के नाम से जाना जाता था।

युवा तुलसीदास को सांसारिक सुखों के कीड़ों ने काट लिया। स्वामी शेष सनातनजी से अनुमति लेकर वे अपने जन्म स्थान पर वापस चले गए। वहां उन्होंने पाया कि उनका परिवार नष्ट हो गया था। वह वहां कुछ समय रुके और लोगों को रामायण का पाठ किया। पास के एक गाँव का एक ब्राह्मण उनका राम कथा का पाठ सुनने आया करता था। बाद में वर्ष 1583 में तुलसीदास का विवाह ब्राह्मण की पुत्री रत्नावली से हुआ। तुलसीदास को अपनी पत्नी से गहरा लगाव था और वह कुछ समय के लिए भी उनके बिना नहीं रह सकते थे। एक बार रत्नावली बिना तुलसीदास को बताए अपनी मां के घर चली गई। तुलसीदास जब घर लौटे तो उन्होंने घर को खाली पाया। वह बेहद निराश था। वह रात में तुरंत अपनी पत्नी से मिलने गया। पति का पागलपन देख रत्नावली चौंक गई। उसने अपने पति को फटकार लगाई और कहा- "मेरे भौतिक शरीर के प्रति आपके मन में जितना जुनून है, भगवान राम के प्रति उस दीवानगी का आधा भी अगर आप विकसित करते हैं, तो आप आसानी से दिव्य महिमा प्राप्त कर सकते हैं"। इन शब्दों ने उसके दिल को छू लिया और उसे गहरा आघात पहुँचा। बिना कुछ सोचे-समझे वह घर से निकल गया। तुलसीदास पवित्र शहर प्रयाग गए जहां उन्होंने साधु का वेश धारण किया। वहां से वह पवित्र स्थानों के दर्शन करने गए। वह काशी पहुंचे। मानसरोवर पहुँचने पर वह एक पेड़ की डाल पर बैठे पवित्र पक्षी कागभुशुंडीजी (एक कौवा) से मिले। फिर वे काशी वापस आए जहां उन्होंने भगवान राम की कहानी सुनाई।

तुलसीदास ने हनुमानजी से मुलाकात की और उनसे भगवान राम के दर्शन (दर्शन) के लिए प्रार्थना की। हनुमानजी ने उन्हें राम दर्शन के लिए चित्रकूट जाने के लिए कहा। तुलसीदास चित्रकूट पहुंचे। भगवान राम और लक्ष्मण, राजसी पोशाक में दो अविश्वसनीय रूप से सुंदर युवकों ने तुलसीदास को दर्शन दिए लेकिन वे भगवान को नहीं पहचान सके। लेकिन दूसरी बार हनुमानजी की मदद से उन्होंने भगवान राम को पहचान लिया और भगवान राम के दर्शन से मंत्रमुग्ध हो गए। हनुमानजी की सलाह से वे अयोध्या गए जहां रामायण पाठ चल रहा था। उन्होंने कर्तव्यपरायणता से कहानी सुनी। वहाँ से वे काशी गए जहाँ वे प्रह्लाद घाट के पास एक ब्राह्मण के घर रहे।

तुलसीदास अब भक्ति के उन्माद में थे। उन्हें दोहों और चौकियों के पद्य प्रारूप में संस्कृत में रामचरित्र लिखने की प्रेरणा मिली। लेकिन सुबह उन्होंने जो कुछ भी लिखा वह शाम को गायब हो गया। एक रात, भगवान शिव उनके सपनों में प्रकट हुए और उन्हें रामायण के छंदों को आम आदमी की भाषा में (हिंदी में) लिखने का आदेश दिया। भगवान शिव और देवी पार्वती ने तुलसीदास को अयोध्या में रहने के लिए कहा। तुलसीदास ने भगवान की बात मानी। वर्ष 1631 के प्रारंभ में, रामनौमी के शुभ दिन, जो कि राम का जन्मदिन

था, प्रात:काल से ही तुलसीदास ने प्रसिद्ध महाकाव्य, श्रीरामचरित्र मानस लिखना शुरू किया। महाकाव्य को पूरा होने में 2 साल, 7 महीने और 26 दिन लगे। 1633 में राम सीता विवाह के दिन रामचरित्र मानस के 7 खंड पूरे हुए थे।तब तुलसीदास रामचरितमानस की पांडुलिपि लेकर काशी चले गए। वह बाबा विश्वनाथ मंदिर गए और अपनी पांडुलिपि भगवान शिव और देवी पार्वती की मूर्तियों के चरणों में रख दी। अगली सुबह जब मंदिर के दरवाजे खोले गए, तो सभी को आश्चर्य हुआ कि पांडुलिपि के कवर पर भगवान शिव के प्रतीक के साथ एक दिव्य नारा "सत्यं शिवम सुंदरम" लिखा हुआ था।

पंडितों (पुजारियों) को उनके काम से जलन हुई और उन्होंने किताब को नष्ट करने की कोशिश की। पांडुलिपि को चुराने और उसे नष्ट करने के लिए दो चोरों को भेजा गया था। दो प्राचीन योद्धाओं को धनुष और बाणों से घर के द्वार की रखवाली करते देख चोरों को आश्चर्य हुआ। वे योद्धाओं को देखकर मंत्रमुग्ध हो गए और उनका हृदय शुद्ध हो गया। उन्होंने चोरी करना छोड़ दिया और प्रभु का नाम गाना शुरू कर दिया। जब तुलसीदास को पता चला कि भगवान को स्वयं आकर पुस्तक की रखवाली करनी है, तो उन्होंने पुस्तक को अपने मित्र टोडरमल के पास रख लिया। पुस्तक की नई प्रतियाँ तैयार की जा रही थीं। ईर्ष्यालु पंडितों ने पुस्तक की प्रामाणिकता का परीक्षण करने का निर्णय लिया। उन्होंने किताब को एक और परीक्षण के माध्यम से रखने की साजिश रची। उन्होंने पांडुलिपि को सभी वेदों, शास्त्रों और पुराणों के नीचे भगवान शंकर के मंदिर में रखा। सभी को हैरानी हुई कि सुबह किताब सभी पवित्र पुस्तकों में सबसे ऊपर पाई गई। पंडित लज्जित हुए और तुलसीदास के चरणों में गिर पड़े। वे उससे क्षमा याचना करने लगे।

मंदिर की घटना के बाद तुलसीदास असीघाट में रहने लगे। एक रात, पाठ समाप्त करने के बाद, कलयुग आया और तुलसीदास को पीड़ा देने लगा। हनुमानजी उनके बचाव में आए और उन्होंने तुलसी को भगवान राम की स्तुति में और श्लोक लिखने को कहा। तुलसी ने हनुमानजी की सलाह मानी और विनय पत्रिका के नाम से विख्यात राम से प्रार्थना की। 1680 में, तुलसीदास ने भगवान के पवित्र नाम "राम राम" का जाप करते हुए अपना भौतिक शरीर छोड़ दिया। तुलसीदास जी की जीवन की कितनी सुंदर यात्रा है जो भगवान के पवित्र नाम "राम" से शुरू और समाप्त हुई।

तुलसीदास का जन्म उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के राजपुर में संवत १५८९ या १५३२ ई. में हुआ था। वह जन्म से सरयूपरिणा ब्राह्मण थे और उन्हें संस्कृत में लिखी रामायण के लेखक वाल्मीकि का अवतार माना जाता है। इनके पिता का नाम आत्माराम शुक्ल दुबे और माता का नाम हुलसी था। तुलसीदास अपने जन्म के समय रोए नहीं थे। वह सभी बत्तीस दांतों के साथ पैदा हुआ था। बचपन में उनका नाम तुलसीराम या राम बोला था। तुलसीदास की पत्नी का नाम बुद्धिमती (रत्नावली) था। तुलसीदास के पुत्र का नाम तारक था। तुलसीदास को अपनी पत्नी से बहुत लगाव था। वह उससे एक दिन का भी अलगाव नहीं सह सका। एक दिन उसकी पत्नी बिना पति को बताए अपने पिता के घर चली गई। तुलसीदास रात को चुपके से अपने ससुर के घर उनसे मिलने गए। इससे बुद्धिमती में शर्म की भावना पैदा हुई। उसने तुलसीदास से कहा"मेरा शरीर मांस और हड्डियों का एक जाल है। यदि आप भगवान राम के लिए मेरे गंदे शरीर के लिए अपने प्यार का आधा भी विकसित करेंगे, तो आप निश्चित रूप से संसार के सागर को पार करेंगे और अमरता और शाश्वत आनंद प्राप्त करेंगे। " ये शब्द तुलसीदास के हृदय को तीर की तरह चुभ गए। वह वहां एक पल के लिए भी नहीं रुका। उन्होंने घर छोड़ दिया और एक तपस्वी बन गए। उन्होंने तीर्थ के विभिन्न पवित्र स्थानों की यात्रा में चौदह वर्ष बिताए।

तुलसीदास प्रकृति की पुकारों का उत्तर देकर लौटते समय अपने जलमग्न में बचे जल को उस वृक्ष की जड़ों में फेंक देते थे जिस पर एक आत्मा निवास करती थी। तुलसीदास जी से आत्मा बहुत प्रसन्न हुई। आत्मा ने कहा, "हे मनुष्य! मुझसे वरदान प्राप्त करो।" तुलसीदास ने उत्तर दिया, "मुझे भगवान राम के दर्शन करने दो"। आत्मा ने कहा, "हनुमान मंदिर जाओ। वहाँ हनुमान एक कोढ़ी के वेश में रामायण को प्रथम सुनने वाले के रूप में सुनने आते हैं और सबसे अंतिम स्थान को छोड़ देते हैं। उसे पकड़ लो। वह आपकी मदद करेगा "। तदनुसार, तुलसीदास हनुमान से मिले, और उनकी कृपा से, भगवान राम के दर्शन या दर्शन हुए।

तुलसीदास ने बारह पुस्तकें लिखीं। सबसे प्रसिद्ध पुस्तक उनकी रामायण - राम-चरित-मानस - हिंदी में है। उन्होंने यह पुस्तक हनुमान के निर्देशन में लिखी थी। इस रामायण को उत्तर भारत के हर हिंदू घर में बड़ी श्रद्धा के साथ पढ़ा और पूजा जाता है। यह एक प्रेरक पुस्तक है। इसमें सुंदर तुकबंदी में मीठे दोहे हैं। विनय पत्रिका तुलसीदास द्वारा लिखित एक और महत्वपूर्ण पुस्तक है।कुछ चोर तुलसीदास के आश्रम में उनका सामान लेने आए थे। उन्होंने नीले रंग का एक रक्षक देखा, जिसके हाथों में धनुष और बाण था, जो द्वार पर पहरा दे रहा था। वे जहां भी जाते थे, गार्ड उनका पीछा करते थे। वे डरे हुए थे। प्रात:काल उन्होंने तुलसीदास से पूछा, "हे पूज्य संत! हमने आपके निवास के द्वार पर एक युवा रक्षक को हाथों में धनुष-बाण के साथ देखा। यह आदमी कौन है? " तुलसीदास चुप रहे और रो पड़े। उसे पता चला कि भगवान राम स्वयं अपने माल की रक्षा के लिए संकट उठा रहे थे। उसने तुरंत अपनी सारी संपत्ति गरीबों में बांट दी।

तुलसीदास कुछ समय अयोध्या में रहे। फिर वे वाराणसी चले गए। एक दिन एक हत्यारा आया और चिल्लाया, "राम के प्रेम के लिए मुझे भीख दो। मैं एक हत्यारा हूँ "। तुलसी ने उसे अपने घर बुलाया, उसे पवित्र भोजन दिया जो भगवान को चढ़ाया गया था और घोषित किया कि हत्यारे को शुद्ध किया गया था। वाराणसी के ब्राह्मणों ने तुलसीदास की निन्दा की और कहा, "हत्यारे का पाप कैसे दूर हो सकता है? आप उसके साथ कैसे खा सकते थे? यदि शिव का पवित्र बैल - नंदी - हत्यारे के हाथों से खा जाएगा, तभी हम स्वीकार करेंगे कि वह शुद्ध हो गया था।" तब हत्यारे को मन्दिर में ले जाया गया और बैल ने उसके हाथों से खा लिया। ब्राह्मणों को शर्मसार किया गया।

एक बार तुलसीदास वृंदावन गए। उन्होंने एक मंदिर का दौरा किया। उन्होंने भगवान कृष्ण की छवि देखी। उसने कहा, "मैं तेरी सुंदरता का वर्णन कैसे करूं हे भगवान! लेकिन तुलसी अपना सिर तभी झुकाएगी जब आप अपने हाथों में धनुष-बाण उठाएंगे।" भगवान ने स्वयं को तुलसीदास के सामने भगवान राम के रूप में धनुष और बाण के साथ प्रकट किया। तुलसीदास के आशीर्वाद ने एक गरीब महिला के मृत पति को फिर से जीवित कर दिया। दिल्ली में मुगल सम्राट को तुलसीदास द्वारा किए गए महान चमत्कार के बारे में पता चला। उन्होंने तुलसीदास को बुलवाया। तुलसीदास सम्राट के दरबार में आए। सम्राट ने संत से कोई चमत्कार करने को कहा। तुलसीदास ने उत्तर दिया, "मेरे पास कोई अलौकिक शक्ति नहीं है। मैं तो राम का ही नाम जानता हूँ।" सम्राट ने तुलसी को कारागार में डाल दिया और कहा, "मैं तुम्हें तभी छोड़ूंगा जब तुम मुझे कोई चमत्कार दिखाओगे"। इसके बाद तुलसी ने हनुमान से प्रार्थना की। शक्तिशाली वानरों के अनगिनत दल शाही दरबार में प्रवेश कर गए। सम्राट भयभीत हो गया और कहा, "हे संत, मुझे क्षमा करें। मैं अब आपकी महानता को जानता हूं।" उन्होंने तुलसी को तुरंत जेल से रिहा कर दिया।

संदर्भ सूची

1. अविनाशराय ब्रह्मभट्ट द्वारा रचित "तुलसी प्रकाश"
2. " मूल से 14 दिसंबर 2013 को पुरालेखित.
3. संत तुलसीदास और उनका साहित्य
4. "जन्म के साथ ही बोला राम का नाम, जनकवि कहलाए गोस्वामी तुलसीदास"